# उत्तर वैदिक काल — 1000 BC to 600BC

## जानकारी के स्रोत

उत्तर वैदिक काल के अन्तर्गत 1000 BC से 600 BC के मध्य का समय आता है इस युग मे वैदिक कबीले अर्थात वैदिक लोग सप्त सैन्धव क्षेत्र से गंगा की ऊपरी घाटी तथा उसके आस-पास के क्षेत्र मे फैल गये थे। क्षेत्रीय परिवर्तन के इस काल मे आर्यों की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक तथा धार्मिक व्यवस्था मे कई परिवर्तन आए सतपथ ब्राह्मण के अनुसार आग जंगलो को जलाते हुए सदा निरा (गंडक) नदी तक पहुंच गयी और इस प्रकार आर्यों का फैलाव यहां तक हो गया उत्तर वैदिक काल के जानकारी के लिए हमे दोनो प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध है अर्थात एव पुरातात्विक

[1] साहित्यिक स्रोत →

1. ① ऋग्वेद संहिता मे बाद मे जोडे गये मंडल उत्तर वैदिक काल के दर्शन कराते है इस काल मे सामवेद यजुर्वेद, अर्थववेद की रचना हुई वैदिक संहिताओ के बाद कई प्रकार के ग्रंथ लिखे गये जिन्हे ब्राह्मण कहा जाता है। आरण्यक एव उपनिषद भी इस काल की जानकारी के लिए महत्वपूर्ण है

2. यजुर्वेद यज्ञ सम्बन्धी अनुष्ठानो का स्पष्ट करता है और इसमे स्तुती गीतो का भी संग्रह है इस संहिता मे संकलित अनुष्ठानिक एव स्तुती गीत इस युग की सामाजिक और सामाजिक राजनीतिक स्थिती पर भी प्रकाश डालते है।

3. अर्थववेद उत्तर वैदिक काल की लोक परम्पराओं का संकलन है तथा वह लोकप्रिय धर्म का प्रतिनिधित्व करता है सामान्य जनता की सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितियों को जानने का यह अच्छा स्रोत है।

4. ब्राह्मण ग्रंथ वैदिक संहिताओं पर टिका-टिप्पणिया है यह अनुष्ठानो के सामाजिक एव धार्मिक पक्षो का भी उजागर करते है

नोट - ये सभी उत्तरकालीन वैदिक ग्रंथ लगभग 1000 BC से 500 BC के मध्य ऊपरी गंगा के मैदान मे रचे गये थे।

5. संसकृत मे लिखे गये रामायण और महाभारत दोनो महाकाव्यो मे प्रारम्भिक भारतीय समाज के बारे मे का भी जानकारी मिलती है

फिर भी भारतीय इतिहास के किसी भी काल खण्ड से इन महाकाव्यों को जोड़ना अपयुक्त नहीं होगा इतिहासकारों का मत है कि इन महाकाव्यों मे जो जानकारी मिलती है वह अधिकांशतया उतर वैदिक काल से संबन्धित है।

नोट (i) उतर वैदिक काल का प्रमुख केन्द्र बिन्दु उपरी गंगा एवं मध्य गंगा घाटियाँ है।

(ii) कुरु कुल का इतिहास महाभारत-महाकाव्य के संग्रहित है महाभारत मे लड़ा गया कौरव पाण्डव का युद्ध 950 BC के आस-पास का है। इस युद्ध मे कौरवों का नाश हुआ था पाण्डव कुरु कुल के ही थे

(iii) साहित्यिक स्रोत स्थान-स्थान पर पश्चिमी उतर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान की क्षेत्रों की चर्चा करते है।

(b) पुरातात्विक साक्ष्य

1. उतर वैदिक काल के ~~साहित्यिक~~ पुरातात्विक स्रोतों से बहुत से समुदायों तथा सांस्कृतिक समूह के बारे मे जानकारी मिलती है, इस काल के लोग अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग किया करते थे किन्तु किसी विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन किसी विशेष प्रजाती अथवा समूह से सम्बध नही किये जा सकते साहित्यिक स्रोतो से जिन क्षेत्रो के बारे मे जानकारी मिलती है उस क्षेत्र मे खेतीहर समुह एक विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन प्रयोग करते थे जिन्हे रंगे हुए धुसर मृदभाड़ या चित्रीत धुसर मृदभाड़ (P.G.W. Pented Grey ware) के नाम से जाना जाता है यह बर्तन और अन्य पुरातत्वीक अवशेष उतर वैदिक काल की भौतिक प्रकाश डालते है।

2. अबतक उपरी गंगाघाटी मे सात सौ से अधिक चित्रीत धुसर मृदभाड के स्थलों की खुदायी की गयी है ये बहावलपुर, घग्गर नदी के सुखे क्षेत्रों, सिन्धु एवं गंगा के तराई वाले क्षेत्रो तथा गंगा यमुना दोआब मे फैले हुए है इन स्थलो की पुर्वी सीमा गंगा के उतरी पश्चिमी मैदान तथा सरस्वती नदी (जो अब राजस्थान के मरुस्थल मे विलीन हो चुकी है) तक फैली है अतरंजी खेरा, अहिछत्र, नूह, हस्तीनापुर, कुरुक्षेत्र, भगवानपुरा तथा जखेरा

चित्रीत धूसर मृदभाड़ संसकृति के प्रमुख स्थल है

3. 2000 BC to 1400 BC की राजस्थान की (बनास संसकृति) का विस्तार सम्भवत: गंगा घाटी मे 800 BC तक हो चुका था। इस तरह काले और लाल मृदभाडो का प्रयोग करने वाले लोगो को भी उत्तर वैदिक संसकृति के साथ जोड़ा जा सकता है

4. वैदिक साहित्य के अनुसार आर्यो का प्रसार पुर्व दिशा की ओर हुआ परन्तु पुरातात्वीक स्रोत "वैदिक आर्यो" के पुर्व दिशा में फैलने को सिद्ध नही करते इस प्रकार पुरातत्वीक साक्ष्य एवं साहित्यीक स्रोतो मे एक बड़ी दुरी दिखायी पड़ती है। हलाकी साहित्यीक स्रोतो से इंगित उत्तर वैदिक समाज और पुरातात्वीक साक्ष्यो से इंगित उत्तर वैदिक समाज, दोनो मे लोहे के प्रयोग का पता चलता है

5. चित्रीत धूसर मृदभाड़ क्षेत्रो मे लोहे की चिजे सामान्यत: प्रचलित थी अतरंजी खेरा, नुह एवम् योधपुर से प्राप्त वस्तुओं की कार्बन 14 पद्धती से निकाली गयी तिथियां बताती है कि इस धातु का प्रयोग अर्थात लोह का प्रयोग 1000 BC से 800 BC के मध्य हो चला था

नोट - (i) सामान्यत: ऐसा स्वीकार किया जाता है कि विश्व मे सर्वप्रथम हित्ती नामक जाति जो एशिया माइनर (टर्की) मे 1800 से 1200 BC के मध्य शासन करती थी, ने ही लोहे का प्रयोग विश्व मे सर्वप्रथम किया
(ii) 1200 BC के पहले हम भारत मे लोहे के अस्तित्व को स्वीकार नही कर सकते
(iii) 1000 BC के आस-पास पाकिस्तान के गान्धार क्षेत्र मे लोहे का प्रयोग होने लगा था
(iv) पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे लोहे का प्रयोग 800 BC मे होने लगा
(v) वैदिक काल के अंतिम दौर मे लोहे का ज्ञान पुर्वी उत्तर प्रदेश और विदेह मे फैल गया था

6. (vi) लोहे का उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पंजाब तथा बाद मे दक्षिण से इकट्ठा किया जाने लगा।

7. ऋग्वेद मे वर्णित अयस शब्द लोहे के अर्थ मे हो सकता है लेकिन पुरातात्वीक खोजो के आधार पर लोहे का प्रयोग उत्तर वैदिक काल मे मिलता है साहित्यीक स्रोत भी इस बात की पुष्टी करता है। यजुर्वेद के अयस को श्याम अयस लिखा गया है तथा ब्राह्मण ग्रंथो मे लोहे को कृष्ण अयस से सम्बोधित किया गया है।

नोट: दक्षिण भारत के महापाषाणिक लोग लोहे के प्रयोग से अच्छे तरह परिचित थे इस लिए अब हम आर्यो को भारत मे लोहे का प्रयोग प्रारम्भ करने का श्रेय नही दे सकते

Scanned with CamScanner